RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

संस्कार निर्माण में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन

वर्षा मक्कड़

शोधार्थी श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान

प्रस्तावना –

बाल संस्कार एवं बाल सुरक्षा विद्यार्थी के शैक्षिक स्तर, सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर व भावात्मक स्तर को परिलक्षित करता है, जिसमें बालक सुरक्षित व संस्कारित गुणों के साथ–साथ समाज में उठ–बैठ करना एवं अपने आपको प्रसन्न महसूस करता है।

बाल संस्कारों में परिवार के बुजुर्गो एवं अन्य सदस्यों के सहारे इनका विकास आसानी से होता है। बाल अधिकार अधिनियम 2012 में भी बाल सुरक्षा के अन्तर्गत 6 से 14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा हेतु प्रेरित किया है और यह भी बाल सुरक्षा के अन्तर्गत आता है।

यह भी अवधारणा प्राप्य है कि संस्कारों के अनुष्ठान के माध्यम से व्यक्ति एक तरफ दोषों से विमुक्त होता है तो दूसरी तरफ उसमें नवीन गुणों का प्रादुर्भाव भी हो जाता है इस प्रकार उसमें किसी उद्देश्य विशेष के लिए क्षमता योग्यता एवं विशिष्टता जैसे अवर्णनीय गुणों का प्रस्फुटन हो जाता है। संस्कार का प्रयोग इसी सामूहिक अर्थ में किया जाता था, जबकि मीमांसा के अन्तर्गत इसका अर्थ विधिवत् शुद्धि से है तथा अद्वैत वेदान्तीभाव से इसका सम्बन्ध आत्मव्यंजक शक्ति से है।

संस्कार व्यक्ति को राष्ट्र, समाज और व्यक्तिगत जिम्मेदारी में निपुण या कार्यकुशल बनाते है। जिसे हम आज की साधारण भाषा में प्रशिक्षित कह सकते हैं। संस्कार हमारे धार्मिक और सामाजिक जीवन की पहचान होते हैं। यह न केवल हमें समाज और राष्ट के अनुरूप चलना सिखाते हैं बल्कि हमारे जीवन की दिशा भी तय करते हैं।

मनीषियों ने हमें सुसंस्कृत तथा सामाजिक बनाने के लिए अपने अथक प्रयासों और शोधों के बल पर ये संस्कार स्थापित किए हैं। इन्हीं संस्कारों के कारण भारतीय संस्कृति अद्वितीय है। हालांकि हाल के कुछ वर्षों में आपाधापी की जिंदगी और अतिव्यस्तता के कारण धर्मावलम्बी अब इन मूल्यों को भुलाने लगे हैं और इसके परिणाम भी चारित्रिक गिरावट, असामाजिकता या अनुशासनहीनता के रूप में हमारे सामने आने लगे हैं।

दैनिक भास्कर में प्रकाशित हुए लेख के अनुसार ''परिवार, विद्यालय एवं समाज में पाये जाने वाले संस्कारों के आधार पर ही बालक चलना, बोलना, मैं और तुम में अन्तर करना और चारों ओर की वस्तुओं के सरलतम गुणों को सीखता है, वही संस्कार निर्माण है।''

विकास पीडिया के अनुसार ''शिशु के जन्म से लेकर उसके व्यस्क होने तक उसको शिक्षित एवं संस्कारित करना, पालन–पोषण या बाल संस्कार (पेरेन्टिंग) कहलाता है।''

शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है और बाल सुरक्षा शिक्षा के शिक्षाविदों द्वारा दी जा रही है। संस्कार निर्माण में शिक्षा की भूमिका का अर्थ है अध्यापकों द्वारा जो संस्कार बालकों को दिये जा रहे हैं उन्हें बड़े संभल कर दिये जाने चाहिए क्योंकि बालक का मस्तिष्क एक ऐसे खाली घड़े की तरह है जिसमें अभी पानी भरा जा सकता है। इसलिए अध्यापक का कर्त्तव्य बाल संस्कारों में और भी अधिक बढ़ जाता है। शिक्षा की भूमिका में बाल सुरक्षा एवं बाल संस्कार केवल अध्यापक एवं कर्मचारी वर्ग से ही प्राप्त नहीं होते है बल्कि शिक्षा में काम में लिये जाने वाले पाठ्यक्रम एवं उसमें निहित पाठ्य विषय वस्तु पर भी बाल सुरक्षा एवं बाल संस्कार निर्माण को दिये जा सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है और बाल सुरक्षा शिक्षा के शिक्षाविदों द्वारा दी जा रही है। संस्कार निर्माण में शिक्षा की भूमिका का अर्थ है अध्यापकों द्वारा जो संस्कार बालकों को दिये जा रहे हैं उन्हें बड़े संभल कर दिये जाने चाहिए क्योंकि बालक का मस्तिष्क एक ऐसे खाली घड़े की तरह है जिसमें अभी पानी भरा जा सकता है। इसलिए अध्यापक का कर्त्तव्य बाल सुरक्षा एवं बाल संस्कारों में और भी अधिक बढ़ जाता है। शिक्षा की भूमिका में बाल सुरक्षा एवं बाल संस्कार केवल अध्यापक एवं कर्मचारी वर्ग से ही प्राप्त नहीं होते है बल्कि शिक्षा में काम में लिये जाने वाले पाठ्यक्रम एवं उसमें निहित पाठ्य विषय वस्तु पर भी बाल संस्कार निर्माण को दिये जा सकते हैं।

'शिक्षा' व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति तथा सभ्यता और संस्कृति के उत्थान के लिए अनिवार्य है। प्राचीनकाल में भारतवासियों ने शिक्षा के इस महत्व को समझ लिया था। इसी के फलस्वरूप भारत के सुदूर अतीत में शिक्षा की सुन्दर व्यवस्था की गयी थी। भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में मौलिक विचारकों एवं विद्वानों को जन्म दिया, जिनसे इस देश का मस्तक आज भी यज्ञ और गौरव से उन्नत हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. संस्कार निर्माण में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।

परिसीमन :–

1. प्रस्तुत शोध में बीकानेर संभाग को चयनित किया गया है।
2. बीकानेर संभाग से माध्यमिक स्तर के बालकों को चयनित किया गया है।
3. माध्यमिक स्तर के कुल 200 बालक–बालिकाओं चयनित किया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संग्रह हेतु विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में विषय–वस्तु से संबंधित तथ्यों एवं सूचनाओं का चयन संदर्भ पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, संस्मरणों आदि में लिखित विवरणों का विश्लेषण करने के पश्चात् किया गया है। शोध प्रक्रिया की दृष्टि से विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक विषयों पर किये जाने वाले अध्ययन में यह विधि सर्वथा उपयुक्त, तर्कसंगत एवं उत्तम मानी जाती है। शोध प्रकृत्ति के अनुसार अध्यायों के शीर्षक अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निर्मित किए गए हैं और उनसे सम्बन्धित सम्प्रत्यय एवं तथ्यों का संग्रह किया गया है।

निष्कर्ष निरूपण –

बाल संस्कार निर्माण में साक्षात्कार के माध्यम से शोधार्थी ने यह पाया कि प्राचीन शिक्षा एवं वर्तमान शिक्षा पद्धति में सार्थक अन्तर है अतः यह कहा जा सकता है कि प्राचीन शिक्षा पद्धति वर्तमान शिक्षा पद्धति से ज्यादा संस्कारित है। बाल सुरक्षा पाठ्य पुस्तकों, कर्मचारियों व विद्यार्थियों के तीनों वर्गों के सम्मिलित प्रयास से ही सम्भव है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. भटनागर, आर. पी. (2003) : ''शिक्षा अनुसंधान'', इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, पृ. सं. 120 ।
2. भटनागर, सुरेश (1993) : ''अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार'', इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ (चतुर्थ संस्करण), पृ. सं. 128 ।
3. भटनागर, ए. वी. एवं भटनागर, मीनाक्षी (2004) : ''शिक्षण में अधिगम का मनोविज्ञान'', आर, लाल बुक डिपो, मेरठ, चतुर्थ संस्करण, पृ. सं. 302 ।
4. भार्गव, महेश (1976) : ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'', हर प्रसाद भार्गव मार्ग, कचहरी घाट, आगरा, पृ.सं.– 103 ।
5. भाई, योगेन्द्र जीत (1967) : ''बाल मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, (नवीनतम संस्करण), पृ. सं. 86 ।
6. मणि, शारदा (1993) : ''किशोर मनोविज्ञान'', हिन्दी माध्यम, कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ. सं. 211 ।
7. मंगल, सुधा (2000) : ''बाल विकास'', आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, पृ. सं. 211 ।
8. लवानियाँ, एम.एम. (2001) : ''भारत में सामाजिक समस्याएं'', कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, पृ. सं. 39 ।
9. शर्मा, संगीता (2005) : ''महिला विकास एव राजकीय योजनाऐं'', रितू पब्लिकेशन, जयपुर, (प्रथम सस्करण), पृ. सं. 1ए 3।
10. श्रीवास्तव, डी.एन. (1998) : ''अनुसंधान विधियां'', साहित्य प्रकाशन, हॉस्पीटल रोड, आगरा, पृ. सं. 451 – 452 ।
11. श्रीवास्तव, डी.एन.; वर्मा, प्रीति (2000) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, (सोहलवां संस्करण), पृ. सं– 51 ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved